कथा क्रम

जुलाई–सितम्बर 2022

मूल्य – ₹ 40

कथा साहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

पुस्तकें मिली

1.	सरहदों के पार दरख्तों के साये में	रेखा भाटिया	उपन्यास	शिवना प्रकाशन सीहोर, म.प्र.
2.	मन कस्तूरी रे	अंजू शर्मा	उपन्यास	शिवना प्रकाशन सीहोर, म.प्र.
3.	अपनी सी रंग दीन्ही रे	सपना सिंह	उपन्यास	शिवना प्रकाशन सीहोर, म.प्र.
4.	कोई खुशबू उदास करती है	नीलिमा शर्मा	कहानी संग्रह	शिवना प्रकाशन सीहोर, म.प्र.
5.	हाशिये का हक	नीलिमा शर्मा	कहानी संग्रह	,, ,, ,, ,,
6.	कुम्हलाई कलियां	सीमा शर्मा	कहानी संग्रह	,, ,, ,, ,,
7.	पंकज सुबीर की कहांनियों का समाज शास्त्रीय अध्ययन	दिनेश कुमार पाल	शोध	,, ,, ,, ,,
8.	गीली पांक	उषा किरण खान	कहानी संग्रह	,, ,, ,, ,,
9.	बर्फ के फूल	मनीषा कुलश्रेष्ठ	कहानी संग्रह	,, ,, ,, ,,
10.	गुमशुदा	जितेन ठाकुर	कहानी संग्रह	किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली
11.	नया गंगा	विजय सिंह	कहानी संग्रह	राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली
12.	कलम का सिपाही	प्रेमचन्द	जीवनी	हंस प्रकाशन प्रयागराज
13.	आइडिया से परदे तक	रामकुमार सिंह स्सयांशु सिंह	कहानी संग्रह	हंस प्रकाशन, प्रयागराज
14.	कत्ल की रात	रमेश बन्तरा	कहानी संग्रह	प्रलेक प्रकाशन, प्रा. लिमिटेड
15.	यस सर	अपूर्व जोशी	कहानी संग्रह	18, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोधी रोड, नई दिल्ली
16.	फिर चल दिये	दिनेश शर्मा	कहानी संग्रह	अनन्य प्रकाशन, नवीन शाहदरा
17.	जीते जी इलाहाबाद	ममता कालिया	संस्मरण	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. दरियागंज, नई दिल्ली
18.	कंथा	श्याम बिहारी श्यामल	उपन्यास	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. दरियागंज, नई दिल्ली
19.	भारत के प्रधानमंत्री	रशीद किदवई	विविध	,, ,, ,, ,,
20.	अन सोशल नेटवर्क	दिलीप मंडल गीता यादव	विविध	,, ,, ,, ,,
21.	खिल उठे पलाश	ज्योति झा	कहानी संग्रह	मोनिका प्रकाशन जोगानेर, जयपुर
22.	12 32 कि.मी.	विनोद कापड़ी	विविध	राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली
23.	भीड़ भारत	संजय चौबे	कहानी संग्रह	रश्मि प्रकाशन कृष्णा नगर, लखनऊ
24.	स्त्री विमर्श	डॉ. अनामिका	विविध	अनामिका पब्लिशर्स, दरियागंज, नई दिल्ली
25.	सरोगेट मदर	निर्देश निधि	कहानी संग्रह	अनन्य प्रकाशन, नवीन शाहदरा, नई दिल्ली
26.	ढाई चाल	नवीन चौधरी	कहानी संग्रह	राजकमल प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली
27.	नदी की उंगलियों के निशान	कुसुम भट्ट	कहानी संग्रह	बोधि प्रकाशन, नाला रोड, जयपुर
28.	कर्जा वसूली	गिरिजा कुलश्रेष्ठ	कहानी संग्रह	,, ,, ,, ,,
29.	सुबह न आई	मीना गुप्ता	उपन्यास	नमन प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली
30.	परमाणु अगर परिन्दे होते?	राजेश जैन	कविता संग्रह	भारतीय ज्ञानपीठ, लोधी रोड, नई दिल्ली
31.	हवा में चिराग	गोविन्द मिश्र	उपन्यास	अमन प्रकाशन, कानपुर उत्तर प्रदेश
32.	चंदर की सरकार	दीर्घ नारायण	कहानी संग्रह	किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली

ISSN-2231-2161

कथा क्रम

वर्ष : 24 अंक : 93

dFkk lkfgR;] dyk ,oa laLÑfr dh =ekfld

जुलाई–सितम्बर 2022

¼dUnh; fgUnh laLFkku vkxjk ls lg;kx izkIr½

कहानियां

10 **राजकुमार सिंह** : चाहना
17 **महिमा श्री** : मध्य रात्रि के विप्लवी बादल
26 **हुस्न तबस्सुम निहां** : ये डूबना साहिलों पे
33 **प्रमोद राय** : नकदी फसल
60 **ललिता यादव** : पत्थर की आंखें
64 **नज़्म सुभाष** : मेंहदी
68 **कौशलेन्द्र** : गुलाम
72 **रोअल्ड डाहल** : खाल
अनुवाद–सुशांत सुप्रिय

लघुकथाएं

25 **अमरीक सिंह दीप** : रोज़गार
55 **ज्ञानदेव मुकेश** : एहसास
71 **हरीशचन्द्र पाण्डेय** : भाग्य और ज्योतिष
89 **हरीशचन्द्र पाण्डेय** : एक संकेत
94 **पूनम पाण्डेय** : चुनाव
109 **ज्ञानदेव मुकेश** : न्याय का तकाज़ा

स्मृति–शेष

05 **शशिकला त्रिपाठी** : आधुनिक मूल्य बोध और मन्नू भण्डारी की कहानियां

लेख

41 **विनोद शाही** : हिंदी उपन्यास का समकाल– दो : ईश्वर का विकल्प और 'शिलावहा'
46 **कंवल भारती** : राधामोहन गोकुल
56 **राजेश राव** : आदिवासी कहानियों का सामाजिक सरोकार

कविताएं

78 **रानी सिंह** : स्त्री होने का जश्न
79 **डिंपल राठौर** : मैं बहुत सारी बातें नहीं जानती, मेरा कोई दिन
80 **सन्तोष पटेल** : अपनी–अपनी टोली, जनकवि वरवर राव को समर्पित
82 **गौरव भारती** : पिता, यह आषाढ़ का महीना है

सिनेमा

83 **डॉ. कुमारी उर्वशी** : हिंदी साहित्य, सिनेमा और समाज

कथा–शोध

90 **पारोमिता दास** : बांग्ला साहित्य में महिला रचनाकारों का योगदान

समीक्षाएं

95 **मीना गुप्ता** : 'कामायनी' से उतरते हुए... (उपन्यास : गोविन्द मिश्र)
97 **डॉ. कुमारी उर्वशी** : खट्टी मीठी स्मृतियों की पुस्तक 'जीते जी इलाहाबाद' (संस्मरण : ममता कालिया)
100 **रजनी गुप्त** : अनसुलझे सवालों के घेरे में– (उपन्यास : उर्मिला शिरीष)
103 **साधना अग्रवाल** : तार–तार होती मानवीयता (उपन्यास : चन्दन पाण्डेय)
105 **शुभा श्रीवास्तव** : राजनटिनी : समकालीन सार्थकता (उपन्यास : गीता श्री)
107 **चंद्रकला** : राग पहाड़ी (उपन्यास : नमिता गोखले)

प्रसंगवश

110 **राजेन्द्र सिंह गहलौत** : क्या लिपि सिर्फ भाषा की अभिव्यक्ति का माध्यम है?

2 **सम्पादकीय** : अमृतोत्सव, समाज और साहित्य

आवरण : **बंसीलाल परमार**

रेखाचित्र : **संदीप राशिनकर**

संपादक
शैलेन्द्र सागर
संपादन सहयोग
रजनी गुप्त
सहयोग
मीनू अवस्थी
प्रबन्ध सहायक
राम मूरत यादव
संपादन संचालन : अवैतनिक

संपादकीय सम्पर्क :
डी–107, महानगर विस्तार, लखनऊ–226006
दूरभाष : 09415243310
e-mail : kathakrama@gmail.com, kathakrama@rediffmail.com

इस अंक का मूल्य : 40 ₹
सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत त्रैवार्षिक–450 ₹, आजीवन 3000 ₹
संस्थाएं : वार्षिक–200 ₹, त्रैवार्षिक–550 ₹, आजीवन 3500 ₹
(कथाक्रम खाता : 10059002392 S.B.I, IFSC CODE- SBIN0008189)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, प्लाट नं. 755/99 A, गोयला इनडस्ट्रियल एरिया, यू.पी.एस.आई. डी.सी.–देवा रोड, चिनहट, लखनऊ–226019

अमृतोत्सव, समाज और साहित्य

भारत की स्वतंत्रता के अमृतोत्सव को पूरे जोशोखरोश से मनाया जा रहा है जो जरूरी था। आखिर किसी राष्ट्र और उसके नागरिकों के लिए आजादी के पचहत्तर साल गुजरना कोई साधारण बात नहीं है, खास तौर पर ऐसी स्वतंत्रता जो लगभग दो सदी की गुलामी के बाद मिली हो। यह इसलिए भी अहम है क्योंकि वह आजादी सिर्फ भौतिक आजादी नहीं थी बल्कि हमारी दैहिक स्वतंत्रता के साथ हमारी मानसिक, बौद्धिक और संवेदनात्मक आजादी भी थी। देश के लोकतंत्र और उससे जुड़ी तमाम संस्थाओं, मानवीय गरिमा और अस्मिता की संरक्षा तथा उनका विकास आजादी का एक अनिवार्य मापदंड है। आजादी का सीधा ताल्लुक सद्भाव, सामंजस्य और सहिष्णुता से भी है जिसका देश के आम नागरिक पर सीधा प्रभाव पड़ता है। यदि देशवासियों अथवा उसके किसी अंग को वह उपलब्ध नहीं है तो फिर आजादी की कोई अहमियत नहीं है। ऐसी स्वतंत्रता की उम्र बेमानी है ठीक उसी तरह जैसे कोई संस्था बिना किसी मकसद या योगदान के साल दर साल अपने वजूद को बनाए रखने का जतन किए रहती है। अलबत्ता यह दृष्टांत निहायत नाकाफी है क्योंकि आजादी के होने या न होने अथवा उसके निष्प्रभावी होने का समाज और आम आदमी के जीवन पर बहुत गहरा असर पड़ता है। आजादी की अनुपस्थिति महज अप्रभावकारी परिघटना नहीं है। मनुष्य के लिए आजादी हवा पानी की मानिंद अपरिहार्य है जिसकी अनुपब्धलता जीवन का थम जाना सरीखा है।

इस नजर से हम अपने देश की स्थिति का आकलन करें तो पाएंगे कि जहां अनेक तरह के विकास और उन्नति का परिदृश्य हमारे सामने प्रकट होता है, वहीं कुछ अत्यंत कष्टप्रद स्थितियों और घटनाओं से भी हम रूबरू होते हैं। सियासत और समाज की बड़ी बदरंग तसवीर हमारे सामने आती है। इस दौर में राजनीति उतनी साफ सुथरी, स्पष्ट व पारदर्शी नहीं है जैसी पहले थी। समाज में कुचक्र व षडयंत्र के इतने घिनौने रूप पहले नहीं थे जो अब दिखते हैं। सियासतदां उतने गैरतमंद नहीं हैं जितने पहले थे। जाहिर है इसका सीधा असर समाज पर पड़ता है। इसीलिए हमारा समाज तमाम तरह की सामाजिक व्याधियों व साम्प्रदायिक संक्रमण से पीड़ित है। क्योंकि चीजें साफ नहीं हैं, इसलिए आम आदमी मतिभ्रष्ट और पशोपेश में उलझा महसूस करता है। निस्सन्देह इसके लिए हमारे राजनेता पूरी तरह जिम्मेवार हैं। समाज को नेतृत्व नेता ही प्रदान करता है अन्यथा 'नेता' के नामकरण का क्या औचित्य है !

इस समग्र परिदृश्य, समूचे माहौल व तमाम प्रासंगिक मुद्दों पर बात करना मुमकिन नहीं है। इसलिए हम कुछेक बिन्दुओं पर केन्द्रित रहेंगे।

आजादी के अमृतोत्सव में आम आदमी की आजादी पर बात करना लाजमी है। देश